Vol 5 Issue 2 August 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Aug - 2015

'हिन्दी–मराठी उपन्यासों में शैक्षणिक समस्याओं का चित्रण'

डॉ.सुरेशकुमार केसवानी
एम.ए., बी.एड, एम.फिल., पीएच.डी
अधिव्याख्याता, विभाग प्रमुख हिन्दी , सीताबाई कला महाविद्यालय,अकोला.

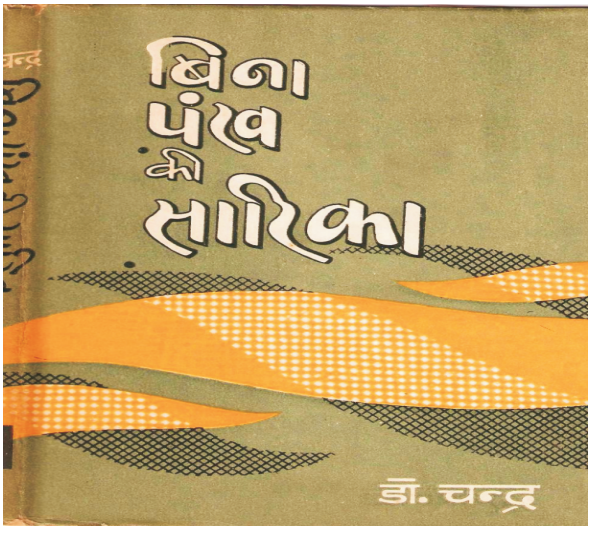

सारांश :

मराठी उपन्यासकारों ने शिक्षालय, विद्यार्थी, अध्यापक आदि शिक्षा से संबंध रखनेवाले प्रायरू सभी अंगों पर विचार किया है । हिंदी में इस प्रश्न की पूर्णत उपेक्षा की गयी है । प्रेमचंद को छोड़कर, जिनका दृष्टिकोण अत्यंत विशाल एवं अनुभव अत्यंत विस्तृत था, इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक किसी नें नहीं सोचा । उन्होंने अवश्य अपने 'वरदान', 'कायाकल्प', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि' पर विशेषत: 'कर्मभूमि' में शिक्षा का उद्देश्य, पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, अध्यापकों और युवकों की मनोवृत्ति, शैक्षणिक संस्थाओं आदि पर अपने विचार प्रकट किए हैं । वह बी.ए., एम.ए. की डिग्री से कहीं अधिक महत्व सेवा भाव को देते हैं । उन्हें अध्यापकों की पैह्रशन–परस्ती एवं स्वार्थमयता से घृणा है, आप अपनी इच्छाओं के गुलाम हैं और अपने शिष्यों को भी उसी वैह्रद और गुलामी में डालते हैं ।'' वह शिक्षा के प्राचीन आदर्श को मानते थे, पर इसका यह अभिप्राय नहीं कि वे साने गुरूजी की तरह गुरूकुल–पद्धति को पुर्नजीवित करना चाहते थे । विद्यालयों को कारखाना समझनें में वे साने गुरुजी से सहमत थे और चाहते थे ''ऊंची से ऊंची तालीम सबके लिए मुआफ हो ।'' शैक्षणिक संस्थाओं का यथार्थ चित्रण एवं उनके दोषों को प्रकाश में लाने में भी उन्होंने तत्परता दिखाई। रांगेय राघव के 'घरौंदे' का विषय छात्र–छात्राओं के मध्य पारस्परिक चलनेवाला प्रेम, प्रोपेह्रसर तथा शिष्याओं के बीच होनेवाले घात–प्रतिघात तथा विद्यालयों का राजनीतिक जागरण है । प्रोपेह्रसर मिश्रा को लेकर उपन्यासकार नें इस समाज की अच्छी पोल खोली है और उनकी त्रुटियों को दिखाया है । कालेज के चुनावों और अविश्वास के प्रस्तावों का भी अच्छा चित्र खींचा गया है ।सारांश यह है कि हिंदी में विश्वविद्यालयों के तो बड़े सफल यथार्थ व्यंग्य–चित्र प्रस्तुत किए गए हैं, पर अध्यापकों की दुरवस्था एवं विद्यालयों में अधिकारियों के कारण होनेवाली उनकी विडंबना के चित्र प्रस्तुत नहीं किए गए हैं । एक और अभाव जो हिंदी उपन्यासों में मराठी उपन्यासों को पढ़ने के बाद खटकता है, वह है अध्यापकों के आदर्शवादी चित्रों का । इस प्रकार मराठी उपन्यासकारों नें जहां अध्यापकों के यथार्थ एवं आदर्श चित्र प्रस्तुत करने पर विशेष ध्यान दिया है, वहां हिंदी लेखकों का मुख्य विषय विश्वविद्यालय, वहां का वातावरण एवं त्रुटियों का प्रकाशन रहा है । शैक्षणिक समस्याओं का उनके समग्र परिवेश में चित्रण दोनो भाषाओं में से किसी के उपन्यासों में नहीं हुआ है । आधुनिक शिक्षा पद्धति के दोषों के संबंध में तो जगह–जगह आलोचना सुनाई पड़ती है, पर उनके निराकरण के उपायों एवं उसके स्थान पर किसी आदर्श शिक्षा पद्धति पर अभी तक कोई उपन्यास नहीं रचा गया है ।

प्रस्तावना :–

भारतीय जीवन में शिक्षा तथा शिक्षकों को सदा बहुत महत्व दिया गया है, क्योंकि शिक्षक सदा त्याग और तपस्या का जीवन बिताते रहते हैं और उन्होंने समाज के सम्मुख उच्च आदर्श प्रस्तुत किए हैं । प्राचीनकाल में शिक्षा निरूशुल्क होती थी । विद्यार्थियों द्वारा शारीरिक श्रम और गुरुसेवा ही विद्या का प्रतिदान समझे जाते थे । पाश्चात्य शिक्षा–प्रणाली के आगमन से शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को शुल्क देना पड़ने लगा और गरीब विद्यार्थियों के सामने न केवल शुल्क की, अपितु भोजन की भी समस्या उठ खड़ी हुई क्योंकि आश्रमों में न केवल निरूशुल्क शिक्षा ही उन्हें मिलती थी, अपितु भोजन की सुविधाएं भी वहां रहती थी । महाराष्ट्र ने विद्यार्थियों की इस समस्या को 'मधुकरी प्रथा' द्वारा सुलझाया, जिसका उल्लेख वा.गो.आष्टे नें मधुकरी मांगकर विद्यार्जन करनेवाले विद्यार्थियों के चित्रण द्वारा किया है । परंतु धीरे–धीरे यह प्रथा समाप्त हो गयी । उधर अध्यापकों का समाज में उतना सम्मान एवं आदर नहीं रह गया जितना प्राचीन युग में था । प्रथम तो वेतन लेने के कारण उन्हें वह सम्मान मिलना संभव न था जो त्याग और तपस्या के बदले समाज व्यक्ति को प्रदान करता है, दूसरे जो वेतन उन्हें मिलता था वह केवल पेट भरने भर को पर्याप्त होता था । दरिद्रावस्था में उन्हें समाज में उच्च स्थान मिलना संभव न था फिर भी १६३४–१६३५ ई.तक महाराष्ट्र में निरूस्वार्थ शिक्षा–प्रसार के कार्य को पर्याप्त सम्मान मिलता रहा और अध्यापकों की दुर्दशा, कष्ट एवं जीवन में होनेवाली प्रवंचनाओं को स्पष्टतरू व्यक्त नहीं किया गया । परंतु धीरे–धीरे उपन्यासकारों को, खांडेकर जैसे कुछ लेखकों को, अपने स्वानुभव से इसकी अवगति हुई और उन्होंने अपनी रचनाओं में चित्रित किया ।

वि.वा.हडप का मुख्य उद्देश्य समाज के अनाचारों को अनावृत्त करना था । अतरू उस अनाचार की शिकार अध्यापिकाओं के

जीवन में होनेवाली विडंबनाओं पर उनकी दृष्टि गयी और 'मास्तरीण कावूह्' में उन्होंने अधिकारियों द्वारा अध्यापिकाओं पर किए गए अत्याचारों का विशद चित्रण किया । वि.वि. बोकील के 'झंझावत' में भी पाठशाला के शिक्षक के दृष्टिकोण से पाठशाला का चित्रण किया गया है । सर्वत्र पाठशालाओं में दिखाई देनेवाले बाजारूपन, पूंजिवादियों के अत्याचार, अशैक्षणिक दृष्टिकोण की प्रधानता इत्यादि का चित्र बोकील नें बड़ी मार्मिकता एवं सजीवता से अंकित किया है । उधर वि.वा.शिरवाडकर के 'वैष्णव' में ऐसे निरीह दीन अध्यापक का चित्र है, जो शाला का सारा कार्य करने पर भी सदा प्रधानाध्यापक से डांट फटकार खाता है तथा जिसके परिश्रम और कार्यक्षमता का श्रेय प्रधानाध्यापक को मिलता है । प्रथम में अध्यापक पर अत्याचार करनेवाले पाठशाला के पूंजीपति व्यवस्थापक है, तो दूसरे में प्रधानाध्यापक एवं शिक्षा–अधिकारी । बेचारा अध्यापक जीवन भर गरीबी एवं दरिद्रता की चक्की में पिसता है । उसे अपनी आकांक्षाओं का सदा दम घोटना पड़ता है । उसकी गरीबी का एक दृश्य देखिए – ''बैठक में एक फटी और बदरंगी शतरंजी बिछी थी । उसके ऊपर रखे तकिए में फटे छेदों में से जगह–जगह रुई झांक रही थी । एक कोने में वंश परंपरा से चली आयी आराम कुर्सी रखी थी । कालगति के कारण पीली पड़ी एक टाईमपीस घड़ी कुछ पुस्तकों के पास रखी टिक–टिक कर रही थी ।'' खांडेकर के 'उल्का' में भी भाऊ के माध्यम से एक गरीब आदर्शवादी अध्यापक की समाज में होनेवाली उपेक्षा, दुर्वस्था, दारिद्रय एवं तिरस्कार, धनाभाव से पुत्री के विवाह में होनेवाली बाधाओं आदि का चित्रण है । निरंतर का 'आंधारांतील दिवे' में भी एक अध्यापक के अपमान व आर्थिक वुंह्ठाओं की कहानी है । इस प्रकार मराठी उपन्यासों में अध्यापकों के ऊपर समाज, शिक्षा अधिकारियों, शाला–व्यवस्थापकों एवं प्रधानाध्यापकों सभी के द्वारा किए जानेवाले अत्याचारों एवं दुर्व्यवहारों का वर्णन किया गया है । हरिभाऊ के युग से आज तक उसकी स्थिति में जो परिवर्तन होता रहा है, उसका दिग्दर्शन सुचारू रूप से मराठी रचनाओं में मिलता है ।

इन अत्याचारों के होते हुए भी मराठी अध्यापक सदैव आदर्श की सर्वोच्च सीमा तक पंहुचने की चेष्टा करता रहा है । उसके आदर्श रूप के प्रति जनता की भी श्रद्धा रही है, जिसके फलस्वपरूप उसके आदर्शवादी चित्रों को उपन्यासों में पर्याप्त स्थान मिला है । खांडेकर के 'उल्का' का भाऊ, पेंडसे के 'हद्दपार' का राजे मास्तर तथा शिरवाडकर के 'वैष्णव' का विनायकराव ऐसे ही आदर्शवादी अध्यापक है । राजे मास्तर का सबल व्यक्तित्व, उसका ग्राम्य जीवन में आदरणीय स्थान, विद्यार्थियों के मन में उसके प्रति आदर, उसका विद्यार्थियों के प्रति प्रेम व्यव्हार, सिद्धांत निष्ठा, मानवता, तेजस्विता आदि गुण उन्हें सामान्य अध्यापकों की श्रेणी से अलग कर देते हैं, परंतु 'वैष्णव' के विनायकराव के समान डरपोक, दुर्बलचित्त, विनम्र, दीन–हीन शिक्षक, जो क्रांति का संदेश सुन अथवा किसी विशिष्ट प्रेरणा को पा अपनी संपूर्ण कायरता त्याग, साहसपूर्वक देश–कार्य में जुट पड़े, सर्वत्र मिल सकते हैं । इसी प्रकार का चरित्र हमें 'कांचन मृग' के सुधाकर में मिलता है । एम.ए. होते हुए भी प्रोपेह्सरी त्यागकर वह गांव में पाठशाला खोलता है तथा निराशापूर्ण परिस्थितियों में भी संकट झेलते हुए राष्ट्र सेवा करता रहता है । उसका ध्येय है ''सच्चा शिक्षक एक मूर्तिकार होता है, जिसका लक्ष्य होता है पत्थर से देवता निर्माण करने का कौशल प्राप्त करना ।'' ऐसे ही उदार चरित्रवाले हैं 'उल्का' के भाऊ जो सरस्वती के सेवा करने के हेतु लक्ष्मी की ओर से पीठ मोड़ लेते हैं ।

अध्यापकों की यथार्थ स्थिति एवं उनके आदर्श चित्र प्रस्तुत करने के साथ साथ मराठी लेखकों नें शालेय जीवन के भी अनेक सुंदर–कुरूप चित्र प्रस्तुत किए हैं । यदि कमलाबाई सोहोनी नें कन्या पाठशाला के मनोरंजक, विनोदी वातावरण, लड़कियों के पारस्परिक वार्तालाप, उनकी भावनाओं और आकांक्षाओं का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है, फडके के 'कुलाव्याची दांडी' में तत्कालीन कालेज–जीवन, वहां के आसपास के वातावरण एवं परिपार्श्व का सुमधुर चित्र अंकित किया गया है । साने गुरुजी के 'श्याम–प्रथम खंड' में विद्यार्थी जीवन का यथार्थ चित्र है, तो 'वैष्णव' में पाठशाला की अव्यवस्था पर कटु व्यंग्य किया गया है । ''शाला विद्यार्थियों के लिए होती है कि उच्चअधिकारियों के लिए । विवाह के लिए देखने आने वाले युवक के सम्मुख जिस प्रकार कोई बालिका वस्त्रालंकारों से विभूषित कर खड़ी की जाती है उसी प्रकार यह शाला अधिकारियों के लिए विशेष रूप से सजायी–संवारी जाती है ।''

एकाध उपन्यासकार नें शिक्षा विषयक दृष्टिकोण भी उपस्थित किया है । साने गुरुजी नें प्राचीन आश्रम पद्धति को श्रेयस्कर माना है तथा 'छड़ी लगे, छम–छम, विद्या आवे धम–धम' के सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया है । उनका मत है कि बच्चे को शीघ्रातिशीघ्र शिक्षा देना प्रारंभ कर देना चाहिए, चाहे उस शिक्षा क्रम में सुंदर सुभाषित और श्लोक ही क्यों न रखे जायँ । वे शिक्षालयों में भेदभाव, छुआछूत को समाप्त करने के पक्ष में थे तथा विश्वविद्यालयों को शिक्षित बनाने का कारखाना मानते थे जो कि आज भी बहुतों की दृष्टि में सच है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मराठी उपन्यासकारों ने शिक्षालय, विद्यार्थी, अध्यापक आदि शिक्षा से संबंध रखनेवाले प्रायरू सभी अंगों पर विचार किया है । हिंदी में इस प्रश्न की पूर्णतरू उपेक्षा की गयी है । प्रेमचंद को छोड़कर, जिनका दृष्टिकोण अत्यंत विशाल एवं अनुभव अत्यंत विस्तृत था, इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक किसी नें नहीं सोचा । उन्होंने अवश्य अपने 'वरदान', 'कायाकल्प', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि' पर विशेषतरू 'कर्मभूमि' में शिक्षा का उद्देश्य, पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, अध्यापकों और युवकों की मनोवृत्ति, शैक्षणिक संस्थाओं आदि पर अपने विचार प्रकट किए हैं । वह बी.ए., एम.ए. की डिग्री से कहीं अधिक महत्व सेवा भाव को देते हैं । उन्हें अध्यापकों की पैह्शन–परस्ती एवं स्वार्थमयता से घृणा है, ''इनमें भी वही दंभ है, वही धन–मद है, वही अधिकार का मद है । आप अपनी इच्छाओं के गुलाम हैं और अपने शिष्यों को भी उसी वैह्द और गुलामी में डालते हैं ।'' वह शिक्षा के प्राचीन आदर्श को मानते थे, पर इसका यह अभिप्राय नहीं कि वे साने गुरूजी की तरह गुरूकुल–पद्धति को पुर्नजीवित करना चाहते थे । विद्यालयों को कारखाना समझनें में वे साने गुरुजी से सहमत थे और चाहते थे ''ऊंची से ऊंची तालीम सबके लिए मुआफ हो ।'' शैक्षणिक संस्थाओं का यथार्थ चित्रण एवं उनके दोषों को प्रकाश में लाने में भी उन्होंने तत्परता दिखाई। 'हमारे स्वूह्लों और कालेजों में जिस तत्परता से फीस वसूली की जाती है, शायद मालगुजारी भी उतनी सख्ती से नहीं वसूल की जाती । वही ह्रदयहीन दफ्तरी शासन जो अन्य विभागों में है, हमारे विद्यालयों में भी है । वहां स्थायी रूप से मार्शल लॉ का व्यवहार होता है । देर में आईए तो जुर्माना, न आईए तो जुर्माना शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है ।'' वह शिक्षालयों में छुआछूत के विरुद्ध थे । एक जागरूक साहित्यकार के समान उन्होंने विभिन्न शैक्षणिक प्रश्नों पर अपने विचार प्रकट किए हैं, परन्तु अध्यापकों की दुरवस्था एवं प्रवंचना के विषय में वे भी मौन रहे । स्वयं कुछ दिन तक अध्यापन–कार्य कर एवं अधिकारी वर्ग की नौकरशाही वृत्ति का अनुभव पाकर भी उन्होंने इस संबंध में कुछ नहीं लिखा, यह आश्चर्य की बात है ।

बाद के लेखकों में भी यही उपेक्षा–भाव बना रहा । यदि किसी नें इस विषय पर कुछ लिखा भी, तो उसका क्षेत्र केवल विश्वविद्यालयों और वहां के वातावरण–चित्रण तक ही सीमित रहा । उनमें से अधिकांश नें भारतीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थी की वास्तविक

परिस्थिति समझने एवं शिक्षा संबंधी प्रश्नों पर मनन करने का प्रयत्न नहीं किया । भगवतीचरण वर्मा के 'तीन वर्ष' में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के वातावरण को सजीव बनाने का प्रयत्न किया गया, एक तो छोटे से छोटे विवरण पर ध्यान देकर तथा दूसरे विद्यार्थियों के पारस्परिक संवादों द्वारा । साथ ही एक सरल ग्रामीण विद्यार्थी की वास्तविक परिस्थिति को तटस्थ रूप में चित्रित करने का भी उन्होंने सफल प्रयत्न किया और बताया कि किस प्रकार विश्वविद्यालय की चमक–दमक में रमेश जैसे ग्रामीण विद्यार्थी अपना लक्ष्य खो बैठते हैं और लड़कियों के लिए बसों एवं रिक्शों के पीछे दौड़ते हैं । अज्ञेय के 'शेखररूएक जीवनी' में भी विश्वविद्यालय के छात्रावासों में रहनेवाले विद्यार्थियों का व्यंग्य–चित्र है । उनके ठाट–बाट, आधे तथा उपनामों को लेकर पुकारने की प्रवृत्ति, आपस में छात्राओं की चर्चा तथा उनके नैकट्य की होड़ आदि दुर्व्यसनों का सजीव चित्र उपस्थित किया गया है । रांगेय राघव के 'घरौंदे' का विषय छात्र–छात्राओं के मध्य पारस्परिक चलनेवाला प्रेम, प्रोपेह्रसर तथा शिष्याओं के बीच होनेवाले घात–प्रतिघात तथा विद्यालयों का राजनीतिक जागरण है । प्रोपेह्रसर मिश्रा को लेकर उपन्यासकार नें इस समाज की अच्छी पोल खोली है और उनकी त्रुटियों को दिखाया है । कालेज के चुनावों और अविश्वास के प्रस्तावों का भी अच्छा चित्र खींचा गया है ।

उपसंहार

सारांश यह है कि हिंदी में विश्वविद्यालयों के तो बड़े सफल यथार्थ व्यंग्य–चित्र प्रस्तुत किए गए हैं, पर अध्यापकों की दुरवस्था एवं विद्यालयों में अधिकारियों के कारण होनेवाली उनकी विडंबना के चित्र प्रस्तुत नहीं किए गए हैं । एक और अभाव जो हिंदी उपन्यासों में मराठी उपन्यासों को पढ़ने के बाद खटकता है, वह है अध्यापकों के आदर्शवादी चित्रों का । इस प्रकार मराठी उपन्यासकारों नें जहां अध्यापकों के यथार्थ एवं आदर्श चित्र प्रस्तुत करने पर विशेष ध्यान दिया है, वहां हिंदी लेखकों का मुख्य विषय विश्वविद्यालय, वहां का वातावरण एवं त्रुटियों का प्रकाशन रहा है । शैक्षणिक समस्याओं का उनके समग्र परिवेश में चित्रण दोनो भाषाओं में से किसी के उपन्यासों में नहीं हुआ है । आधुनिक शिक्षा पद्धति के दोषों के संबंध में तो जगह–जगह आलोचना सुनाई पड़ती है, पर उनके निराकरण के उपायों एवं उसके स्थान पर किसी आदर्श शिक्षा पद्धति पर अभी तक कोई उपन्यास नहीं रचा गया है ।

सहायक ग्रंथ

१. वि.वा.शेरवाडकर – वैष्णव
२. प्रेमचंद – कर्मभूमि
३.लोकमान्य तिलक के केसरी में लेख
४.गो.कृ. गोखले – स्पीचेस
५.प्रभाकर पाध्ये – आजकलचा महाराष्ट्र
६.खांडेकर – गोफ आणि गोफण
७.दा.न.शिखरे – कादम्बरीकार
८.प्रेमचंद – रंगभूमि
९.षांतिस्वरूप गुप्त – हिन्दी तथा मराठी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org